फल विज्ञान विभाग

डॉ यशवन्त सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय
नौणी, सोलन, हिमाचल प्रदेश

सेब में वातरंध्र व्यवधान या शुष्क धब्बों कि व्यवस्था पर परामर्श

इस वर्ष वसंत ऋतु के बाद वर्षा न होने से अधिक दिनों तक मौसम शुष्क रहने कि वजह से सेब में वातरंध्र व्यवधान या शुष्क धब्बों (जो सेब के छिलके पर छोटे–छोटे काले बिन्दु के रूप में दिखाई देते हैं) का प्रकोप रहा है। इसकी रोकथाम के लिए कैलशियम **1 कि0ग्रा0/200 लीटर पानी तथा बोरोन 200ग्रा0/200 लीटर पानी** के हिसाब से छिड़काव करने पर इसे रोका जा सकता है, यदि समय पर छिड़काव न किया जाए तो ये बिन्दु आपस में मिलकर बड़ा आकार बनाते हैं जिससे उस स्थान पर रसेटिंग या दरारें आ जाती हैं।

इसके अतिरिक्त रसेटिंग के अन्य भी बहुत सारे जलवायु कारक जैसे अत्यधिक सुखा या अत्यधिक नमी के कारण भी हो सकता है। बरसात के मौसम में कवकनाषक/किटनाषक दवाईयों का फल की डंडी के पास में एकत्रित होने कि वजह से या एक से अधिक इनकम्पेटिबल रसायनों का छिड़काव करने या अनुमोदित मात्रा से अधिक सांद्रता के घोल का छिड़काव करने से भी फलों पर रसेटिंग उत्पन्न हो सकती है। अतः बागवान इस समस्या के समाधान के लिए अच्छी तरह से घुले हुए रसायनिक तत्वों का उचित सांद्रता में छिड़काव करें और अनुमोदित मात्रा का ही प्रयोग करें। जिन बागीचों में रसेटिंग कि समस्या है वहाँ समस्या के शुरूआत में ही कैलशियम **1 कि0ग्रा0/200 लीटर पानी तथा बोरोन 200ग्रा0/200 लीटर पानी** के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल में करें। इसके अतिरिक्त **प्लांट ग्रोथ रेगुलेटर जैसे जी.ए.$_{4+7}$ + बी.ए. @ 30–60 पी.पी.एम** सान्द्रता के घोल का छिड़काव भी इस समस्या की रोकथाम में कारगर है।

15/7/2022

(N. C. Sharma)

Associate Professor